



Anuska acharjee

15 Jan 2009

06:30 AM

Tezpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 121700301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 15/01/2009
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 06:30:00 घंटे
इष्ट _____: 00:42:49 घटी
स्थान _____: Tezpur
राज्य _____: Assam
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:38:00 उत्तर
रेखांश _____: 92:49:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:41:16 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 07:11:16 घंटे
वेलान्तर _____: -00:09:24 घंटे
साम्पातिक काल _____: 14:49:44 घंटे
सूर्योदय _____: 06:12:52 घंटे
सूर्यास्त _____: 16:47:40 घंटे
दिनमान _____: 10:34:48 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 01:01:14 मकर
लग्न के अंश _____: 05:38:00 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मकर - शनि
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: पू०फाल्गुनी - 4
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: शोभन
करण _____: कौलव
गण _____: मनुष्य
योनि _____: मूषक
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: टू-टुनटुन
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मकर

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1930	पौष	25
पंजाबी	संवत : 2065	माघ	3
बंगाली	सन् : 1415	माघ	1
तमिल	संवत : 2065	थई	2
केरल	कोल्लम : 1184	मकरम	2
नेपाली	संवत : 2065	माघ	2
चैत्रादि	संवत : 2065	माघ	कृष्ण 5
कार्तिकादि	संवत : 2065	पौष	कृष्ण 5

पंचांग

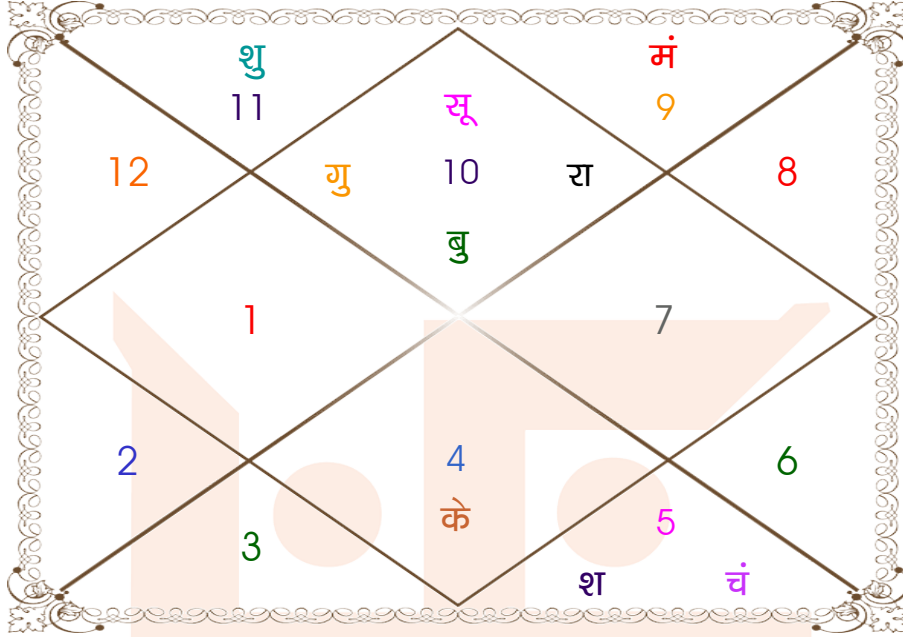
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 5
तिथि समाप्ति काल _____ : 20:07:00
जन्म तिथि _____ : 5
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पू०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 11:24:40 घंटे
जन्म योग _____ : पू०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग _____ : शोभन
योग समाप्ति काल _____ : 25:52:10 घंटे
जन्म योग _____ : शोभन
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 08:41:29 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 45:16:41
भभोग _____ : 57:33:21
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 4 वर्ष 2 मा 16 दि

घात चक्र

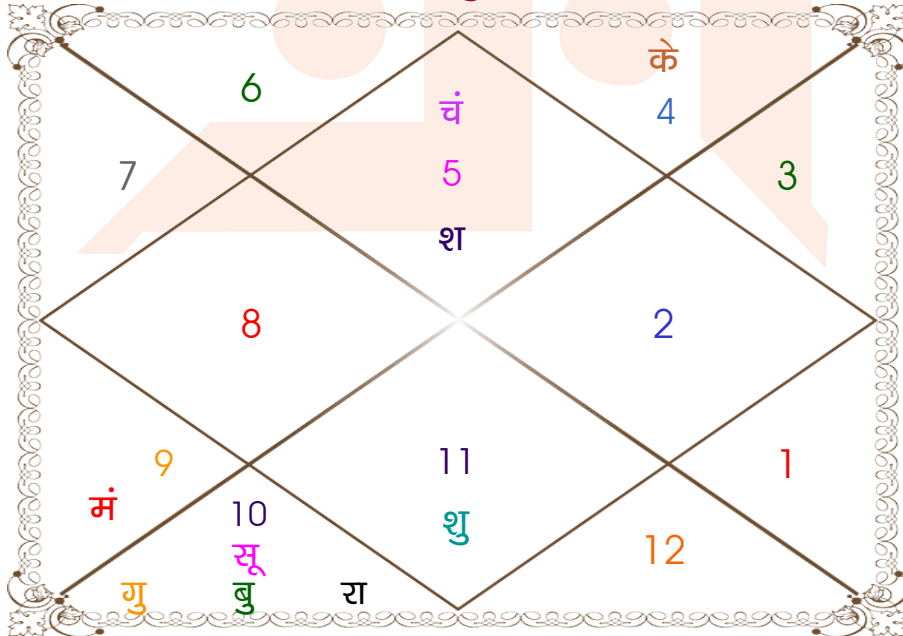
मास _____ : ज्येष्ठ
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : मूल
योग _____ : धृति
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : धनु
चन्द्र _____ : वृश्चिक
मंगल _____ : मकर
बुध _____ : तुला
गुरु _____ : कुम्भ
शुक्र _____ : मीन
शनि _____ : वृश्चिक
राहु _____ : मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

शु			के
बु	सू		श
ल	गु		चं
रा			
मं			

लग्न कुंडली

			शु
के		रा	ल
		सू	बु
चं		गु	
श			मं

विंशोत्तरी
शुक्र 4वर्ष 2मा 16दि
शुक्र

15/01/2009

04/04/2113

शुक्र	03/04/2013
सूर्य	03/04/2019
चन्द्र	03/04/2029
मंगल	02/04/2036
राहु	03/04/2054
गुरु	03/04/2070
शनि	03/04/2089
बुध	04/04/2106
केतु	04/04/2113

योगिनी
उल्का 1वर्ष 3मा 5दि
मंगला

21/04/2025

21/04/2026

मंगला	01/05/2025
पिंगला	22/05/2025
धान्या	21/06/2025
भ्रामरी	01/08/2025
भद्रिका	20/09/2025
उल्का	20/11/2025
सिद्धा	30/01/2026
संकटा	21/04/2026

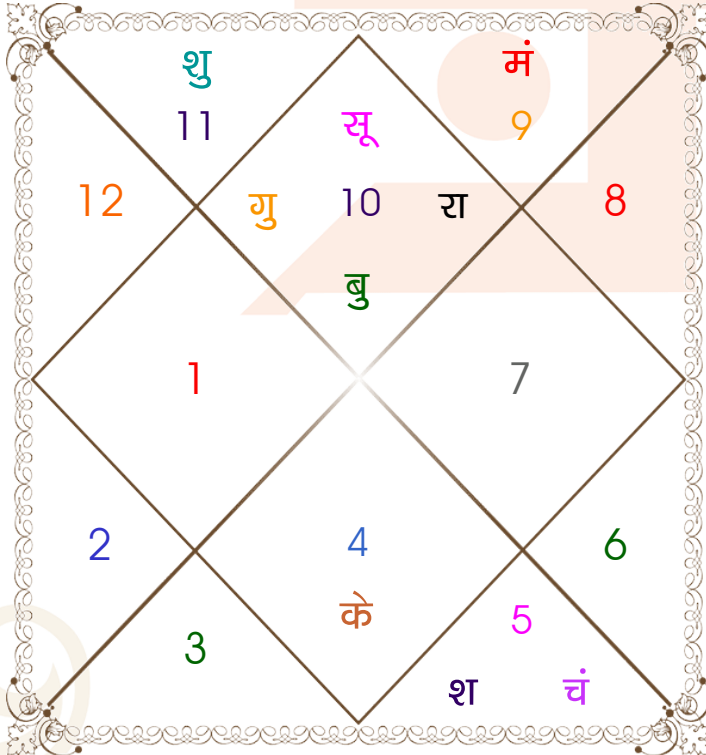
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मक	05:38:00	392:36:06	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	---
सूर्य			मक	01:01:14	01:01:06	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	शत्रु राशि
चंद्र			सिंह	23:51:29	13:46:23	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	शनि	मित्र राशि
मंगल	अ		धनु	20:10:10	00:45:44	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	मित्र राशि
बुध	व		मक	12:40:44	00:39:00	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	सम राशि
गुरु	अ		मक	08:12:37	00:14:08	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	नीच राशि
शुक्र			कुंभ	18:08:30	01:01:05	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	चंद्र	मित्र राशि
शनि	व		सिंह	27:35:39	00:01:33	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	शत्रु राशि
राहु			मक	15:20:09	00:01:01	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	गुरु	मित्र राशि
केतु			कर्क	15:20:09	00:01:01	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	मित्र राशि
हर्ष			कुंभ	25:43:12	00:02:18	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	---
नेप			मक	28:54:02	00:02:04	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	---
प्लूटो			धनु	07:45:57	00:02:03	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	---
दशम भाव			तुला	20:54:51	--	विशाखा	--	16	शुक्र	गुरु	गुरु	--

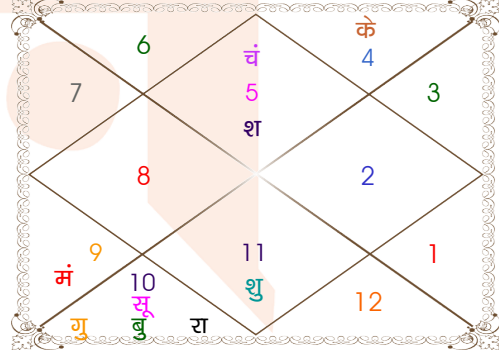
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:59:14

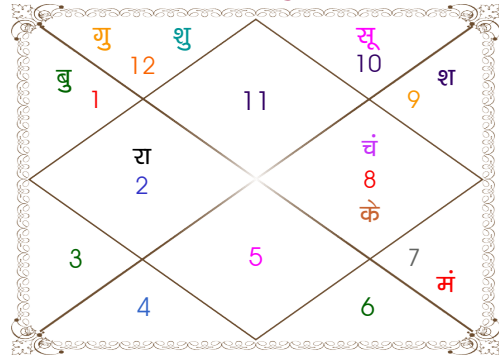
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 23:10:49	मकर 05:38:00
2	मकर 23:10:49	कुम्भ 10:43:37
3	कुम्भ 28:16:26	मीन 15:49:14
4	मेष 03:22:03	मेष 20:54:51
5	वृष 03:22:03	वृष 15:49:14
6	वृष 28:16:26	मिथुन 10:43:37
7	मिथुन 23:10:49	कर्क 05:38:00
8	कर्क 23:10:49	सिंह 10:43:37
9	सिंह 28:16:26	कन्या 15:49:14
10	तुला 03:22:03	तुला 20:54:51
11	वृश्चिक 03:22:03	वृश्चिक 15:49:14
12	वृश्चिक 28:16:26	धनु 10:43:37

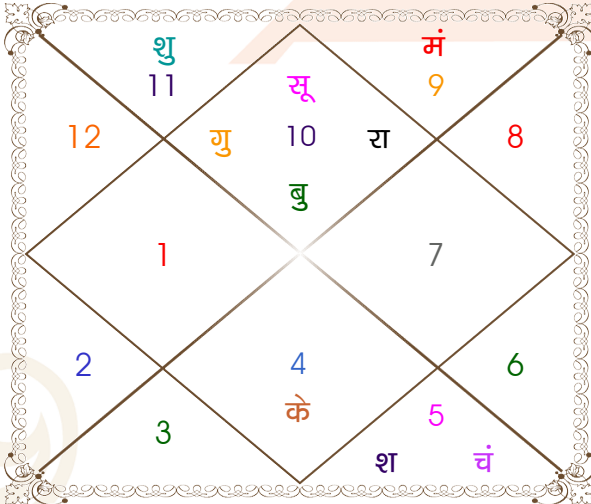
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	05:38:00
2	कुम्भ	13:52:23
3	मीन	20:34:11
4	मेष	20:54:51
5	वृष	16:11:05
6	मिथुन	09:45:46
7	कर्क	05:38:00
8	सिंह	13:52:23
9	कन्या	20:34:11
10	तुला	20:54:51
11	वृश्चिक	16:11:05
12	धनु	09:45:46

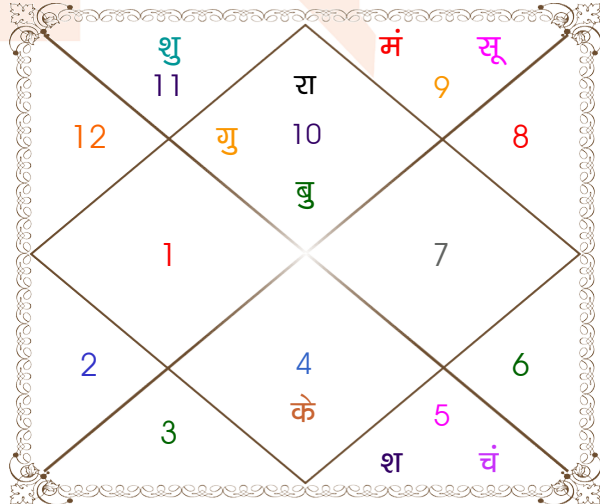
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 4 वर्ष 2 मास 16 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
15/01/2009	03/04/2013	03/04/2019	03/04/2029	02/04/2036
03/04/2013	03/04/2019	03/04/2029	02/04/2036	03/04/2054
00/00/0000	सूर्य 21/07/2013	चंद्र 01/02/2020	मंगल 30/08/2029	राहु 15/12/2038
00/00/0000	चंद्र 20/01/2014	मंगल 02/09/2020	राहु 17/09/2030	गुरु 09/05/2041
00/00/0000	मंगल 28/05/2014	राहु 03/03/2022	गुरु 24/08/2031	शनि 15/03/2044
00/00/0000	राहु 21/04/2015	गुरु 03/07/2023	शनि 02/10/2032	बुध 02/10/2046
00/00/0000	गुरु 08/02/2016	शनि 01/02/2025	बुध 29/09/2033	केतु 21/10/2047
15/01/2009	शनि 20/01/2017	बुध 03/07/2026	केतु 25/02/2034	शुक्र 21/10/2050
शनि 03/04/2009	बुध 26/11/2017	केतु 01/02/2027	शुक्र 27/04/2035	सूर्य 14/09/2051
बुध 01/02/2012	केतु 03/04/2018	शुक्र 02/10/2028	सूर्य 02/09/2035	चंद्र 15/03/2053
केतु 03/04/2013	शुक्र 03/04/2019	सूर्य 03/04/2029	चंद्र 02/04/2036	मंगल 03/04/2054

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
03/04/2054	03/04/2070	03/04/2089	04/04/2106	04/04/2113
03/04/2070	03/04/2089	04/04/2106	04/04/2113	00/00/0000
गुरु 21/05/2056	शनि 06/04/2073	बुध 30/08/2091	केतु 31/08/2106	शुक्र 03/08/2116
शनि 02/12/2058	बुध 15/12/2075	केतु 26/08/2092	शुक्र 31/10/2107	सूर्य 03/08/2117
बुध 09/03/2061	केतु 23/01/2077	शुक्र 27/06/2095	सूर्य 07/03/2108	चंद्र 04/04/2119
केतु 13/02/2062	शुक्र 24/03/2080	सूर्य 03/05/2096	चंद्र 06/10/2108	मंगल 03/06/2120
शुक्र 14/10/2064	सूर्य 06/03/2081	चंद्र 02/10/2097	मंगल 04/03/2109	राहु 04/06/2123
सूर्य 02/08/2065	चंद्र 06/10/2082	मंगल 29/09/2098	राहु 23/03/2110	गुरु 02/02/2126
चंद्र 02/12/2066	मंगल 14/11/2083	राहु 19/04/2101	गुरु 27/02/2111	शनि 16/01/2129
मंगल 08/11/2067	राहु 20/09/2086	गुरु 26/07/2103	शनि 06/04/2112	00/00/0000
राहु 03/04/2070	गुरु 03/04/2089	शनि 04/04/2106	बुध 04/04/2113	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 4 वर्ष 3 मा 6 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध 01/02/2025 03/07/2026	चंद्र - केतु 03/07/2026 01/02/2027	चंद्र - शुक्र 01/02/2027 02/10/2028	चंद्र - सूर्य 02/10/2028 03/04/2029	मंगल - मंगल 03/04/2029 30/08/2029
बुध 15/04/2025 केतु 15/05/2025 शुक्र 09/08/2025 सूर्य 04/09/2025 चंद्र 17/10/2025 मंगल 17/11/2025 राहु 02/02/2026 गुरु 12/04/2026 शनि 03/07/2026	केतु 16/07/2026 शुक्र 20/08/2026 सूर्य 31/08/2026 चंद्र 18/09/2026 मंगल 30/09/2026 राहु 01/11/2026 गुरु 29/11/2026 शनि 02/01/2027 बुध 01/02/2027	शुक्र 14/05/2027 सूर्य 13/06/2027 चंद्र 03/08/2027 मंगल 07/09/2027 राहु 08/12/2027 गुरु 27/02/2028 शनि 02/06/2028 बुध 27/08/2028 केतु 02/10/2028	सूर्य 11/10/2028 चंद्र 26/10/2028 मंगल 06/11/2028 राहु 03/12/2028 गुरु 28/12/2028 शनि 26/01/2029 बुध 21/02/2029 केतु 03/03/2029 शुक्र 03/04/2029	मंगल 11/04/2029 राहु 04/05/2029 गुरु 24/05/2029 शनि 16/06/2029 बुध 07/07/2029 केतु 16/07/2029 शुक्र 10/08/2029 सूर्य 17/08/2029 चंद्र 30/08/2029
मंगल - राहु 30/08/2029 17/09/2030	मंगल - गुरु 17/09/2030 24/08/2031	मंगल - शनि 24/08/2031 02/10/2032	मंगल - बुध 02/10/2032 29/09/2033	मंगल - केतु 29/09/2033 25/02/2034
राहु 26/10/2029 गुरु 16/12/2029 शनि 15/02/2030 बुध 10/04/2030 केतु 03/05/2030 शुक्र 06/07/2030 सूर्य 25/07/2030 चंद्र 26/08/2030 मंगल 17/09/2030	गुरु 02/11/2030 शनि 26/12/2030 बुध 12/02/2031 केतु 04/03/2031 शुक्र 30/04/2031 सूर्य 17/05/2031 चंद्र 14/06/2031 मंगल 04/07/2031 राहु 24/08/2031	शनि 27/10/2031 बुध 24/12/2031 केतु 16/01/2032 शुक्र 24/03/2032 सूर्य 13/04/2032 चंद्र 17/05/2032 मंगल 09/06/2032 राहु 09/08/2032 गुरु 02/10/2032	बुध 22/11/2032 केतु 13/12/2032 शुक्र 12/02/2033 सूर्य 02/03/2033 चंद्र 01/04/2033 मंगल 22/04/2033 राहु 16/06/2033 गुरु 03/08/2033 शनि 29/09/2033	केतु 08/10/2033 शुक्र 02/11/2033 सूर्य 09/11/2033 चंद्र 22/11/2033 मंगल 30/11/2033 राहु 23/12/2033 गुरु 12/01/2034 शनि 04/02/2034 बुध 25/02/2034
मंगल - शुक्र 25/02/2034 27/04/2035	मंगल - सूर्य 27/04/2035 02/09/2035	मंगल - चंद्र 02/09/2035 02/04/2036	राहु - राहु 02/04/2036 15/12/2038	राहु - गुरु 15/12/2038 09/05/2041
शुक्र 07/05/2034 सूर्य 29/05/2034 चंद्र 03/07/2034 मंगल 28/07/2034 राहु 30/09/2034 गुरु 26/11/2034 शनि 01/02/2035 बुध 03/04/2035 केतु 27/04/2035	सूर्य 04/05/2035 चंद्र 14/05/2035 मंगल 22/05/2035 राहु 10/06/2035 गुरु 27/06/2035 शनि 17/07/2035 बुध 05/08/2035 केतु 12/08/2035 शुक्र 02/09/2035	चंद्र 20/09/2035 मंगल 02/10/2035 राहु 03/11/2035 गुरु 02/12/2035 शनि 05/01/2036 बुध 04/02/2036 केतु 16/02/2036 शुक्र 23/03/2036 सूर्य 02/04/2036	राहु 28/08/2036 गुरु 07/01/2037 शनि 12/06/2037 बुध 30/10/2037 केतु 26/12/2037 शुक्र 09/06/2038 सूर्य 28/07/2038 चंद्र 18/10/2038 मंगल 15/12/2038	गुरु 10/04/2039 शनि 27/08/2039 बुध 29/12/2039 केतु 19/02/2040 शुक्र 14/07/2040 सूर्य 26/08/2040 चंद्र 07/11/2040 मंगल 29/12/2040 राहु 09/05/2041

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

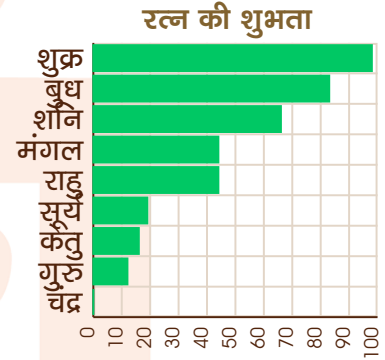
मूलांक	6
भाग्यांक	9
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	98%	धन, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	83%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
नीलम	शनि	66%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, धन
मूंगा	मंगल	44%	व्यय, ग्रह कलेश, हानि
गोमेद	राहु	44%	रोग, दुर्घटना
माणिक्य	सूर्य	19%	रोग, दुर्घटना
लहसुनिया	केतु	16%	दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना
पुखराज	गुरु	12%	रोग, व्यय, पराक्रम हानि
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	03/04/2013	0%	0%	44%	89%	12%	100%	72%	53%	28%
सूर्य	03/04/2019	44%	9%	53%	83%	25%	86%	53%	19%	0%
चंद्र	03/04/2029	31%	22%	44%	89%	12%	98%	66%	19%	0%
मंगल	02/04/2036	31%	9%	59%	70%	25%	98%	66%	19%	28%
राहु	03/04/2054	0%	0%	19%	83%	12%	100%	72%	59%	0%
गुरु	03/04/2070	31%	9%	53%	70%	38%	86%	66%	44%	16%
शनि	03/04/2089	0%	0%	19%	89%	12%	100%	78%	53%	0%
बुध	04/04/2106	31%	0%	44%	95%	12%	100%	66%	44%	16%
केतु	04/04/2113	0%	0%	53%	83%	12%	100%	53%	19%	41%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/01/2009-10/09/2009	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/07/2093-18/08/2095	-----	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	भाग्योदय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	अल्प बचत
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	दाम्पत्य कलह

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म काल में मंगल की स्थिति जन्म कुण्डली में द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपका मंगली दोष भंग हो रहा है। अतः यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप शरीर से स्वस्थ रहेंगी तथा समय अधिक व्यय करने वाली महिला होंगी परन्तु आप अशुभ कार्यों की अपेक्षा शुभ कार्यों पर ही अधिक व्यय करेंगी। साथ ही अपने जीवन काल में समस्त भोग्य पदार्थों का आनन्द पूर्वक उपभोग करके प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन करेंगी। आपके पति भी शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे परन्तु स्वभाव में यदा कदा क्रोधाधिक्य के भाव की प्रबलता रहेगी लेकिन इससे आपके दाम्पत्य जीवन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फल दायक है। इसके प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब हो सकता है परन्तु वैवाहिक प्रक्रिया अत्यन्त ही शान्त एवं सुखद वातावरण में सम्पन्न होगी। किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याएं या व्यवधान उत्पन्न नहीं होंगे। साथ ही विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त समस्त प्रकार के भौतिक सुखों तथा सांसारिक भोग्य पदार्थों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। आपके शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे तथा इनसे आपको कोई असुविधा नहीं होगी।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप शुभ कार्यों पर ही अधिक व्यय करेंगी एवं समस्त भौतिक वस्तुओं का आप सुख पूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगी। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी यथा समय सिद्ध होंगे। मंगल की तृतीय भाव पर दृष्टि आपके पराक्रम में वृद्धि करेगी। जिसके फलस्वरूप समाज में अपना प्रभाव स्थापित करने में सफल रहेंगी। आप को भाई बहनों का सुख एवं वांछित

सहयोग भी जीवन में प्राप्त होता रहेगा। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि होने से आपके शत्रु हमेशा निर्बल रहेंगे। आपके विरोध करने की उनमें क्षमता नहीं रहेगी। साथ ही आप में रोगाभाव भी रहेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि भावी जीवन साथी के लिए शुभ रहेगी। इसके प्रभाव से उसका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में उग्रता रहेगी। इससे आपका दाम्पत्य प्रभावित नहीं होगा तथा आपके आपसी संबंध मधुर एवं प्रगाढ़ रहेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त ही सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसे मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिसका शास्त्रीय नियमानुसार मांगलिक दोष समाप्त हो रहा हो। यदि आप इस प्रकार से अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगी तो जीवन में सौभाग्य, धनैश्वर्य, मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त होकर समाज में यश अर्जित करेंगी।

जन्म कुण्डली मिलान में पूर्ण सावधानी रखनी चाहिए तथा जिस युवक के द्वादश भाव में मंगल स्थित हो उसे यदि अत्यावश्यक न हो तो विवाह की उपेक्षा करनी चाहिए। शेष भावों में मिलान उत्तम रहेगा एवं इसके प्रभाव में वृद्धि होकर शुभ फल भी अधिक मात्रा में होंगे। इस प्रकार आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा तथा इसमें आपको किसी भी प्रकार से कष्ट या परेशानी नहीं रहेगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर थोड़ी बहुत बाधाएं आती रहती हैं। व्यक्तित्व निर्माण में परिश्रम करने पर ही लाभ मिलता है। विद्या व्यवसाय सामान्य रहती है। आगे बढ़ने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है। मानसिक परेशानियाँ समय-समय पर आती रहती हैं। जीवन में कभी-कभी अपयश मिलता है जिससे जातक को विरक्ति पैदा होती है। जातक अपने जीवन में अनेक बार कार्य (व्यवसाय) को बदलता है। जिसमें कभी नुकसान भी हाथ लगता है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में अधिक नुकसान पाता है। इस योग के कारण अनेक तरह के नीच कर्म जातक के द्वारा किये जाते हैं और जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करती रहती है। इसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है एवं जातक समय-समय पर मानसिक रूप से अशान्त हो जाता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी-कभी दुःखमय हो जाता है तथा मातृ-पितृ सुख का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। अपने रिश्तेदार समय-समय पर नुकसान पहुँचाते हैं। जातक को केस मुकदमों में प्रायः हार का सामना करना पड़ता है और सामाजिक प्रतिष्ठा का हास होता है। जातक को प्रायः सुख का अभाव रहता है और अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं होते। दूसरों से कभी अपमान सहना पड़ता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय आता है।

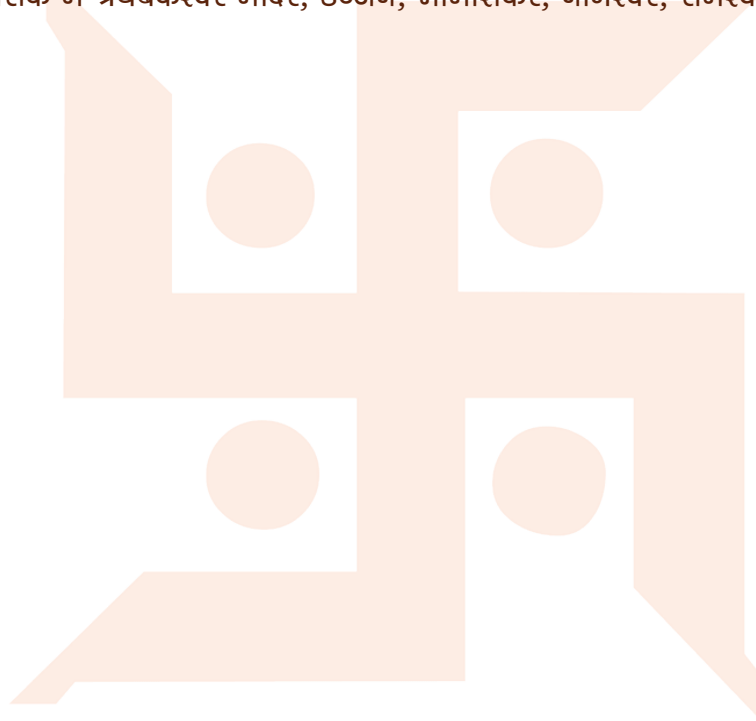
यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- आपकी कुण्डली में नीचस्थ गुरु लग्न में है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश अष्टम भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध, गुरु, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण

और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको सर्वप्रकार से वे आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उनके द्वारा आपको विशेष धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रहेगा एवं उनका कहना मानने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। उनकी सेवा करना तथा वांछित सहयोग प्रदान करना आप अपना नैतिक कर्तव्य समझेंगी। आप के मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे आपसी

संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा फिर भी आपसी संबंध सामान्य ही समझे जाएंगे।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, कूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा आपके प्रति उनके मन में सम्मान तथा स्नेह का भाव रहेगा। जीवन में उनसे आप पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य क्षेत्र में वांछित सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगी। साथ ही सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा वांछित सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा तथा आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में कटुता या तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह कुछ समय तक रहेगी। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उन्हें अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करती रहेंगी।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुःशील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एवं दाँत रोगी होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(03/04/2019 - 03/04/2029)

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 03/04/2019 को आरम्भ और 03/04/2029 को समाप्त होगी।

चन्द्र अष्टम भाव में अवस्थित है और अष्टम भाव लम्बी आयु या आयु-विस्तार, विरासत, इच्छाओं, बीमा, पेंशन, डूबने से मृत्यु, दुर्भाग्य, दुःख, अपमान, विषाद, असंतोष बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि आश्चर्य और उथल-पुथल की घटनाओं से भरी होगी और आपके जीवन में अनेक आश्चर्यजनक घटनाएं घटेंगी।

स्वास्थ्य :

अष्टम महादशा का स्वामी चन्द्र अष्टम भाव में अवस्थित है। अष्टम भाव लंबी आयु का प्रतिनिधित्व करता है। फलस्वरूप आपकी आयु लम्बी होगी और आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। जैसे किसी बड़ी स्वास्थ्य समस्या अथवा दुर्घटना की संभावना नहीं है किन्तु इस अवधि में आपकी कुछ झड़पें हो सकती हैं।

अर्थ तथा संपत्ति :

अर्थ की दृष्टि से यह दशा उत्तम है और आपको भूमि, वाहन, शक्ति या पूर्व में अर्जित शिक्षा के कारण पद की प्राप्ति हो सकती है। कुछ नुकसान भी हो सकता है। फिर भी आपको कुछ पैतृक सम्पत्तियों की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

एक व्यवसायी के रूप में आप संतुष्ट रहेंगे। यदि सेवारत हों तो आपकी पदोन्नति हो सकती है, यद्यपि आप कुछ मानसिक कष्ट और मनोवैज्ञानिक कुण्ठाओं के शिकार हो सकते हैं। आपका हृदय विशाल होगा और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो कुछ उतार-चढ़ाव की संभावनाएं हैं जिनके फलस्वरूप आप का भाग्य उत्तम होगा और आप उन्नति करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी आपके सहायक व सहयोगी होंगे और पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और सम्भव है कि आपके माता-पिता आपके जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं जिससे आपका जीवन सुखमय व सौहार्द्रपूर्ण हो।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - बुध
(01/02/2025 - 03/07/2026)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 03/04/2019 को प्रारंभ हुई थी और 03/04/2029 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 01/02/2025 को प्रारंभ होकर 03/07/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रूपरेखा आदि का परिचायक है। इस अवधि में आपकी रुचि हंसी-मजाक में रहेगी। मानसिक शक्ति प्रबल रहेगी। ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी। प्राच्य विद्या और अध्यात्म का अध्ययन करेंगे। किसी पाठ्यक्रम में भाग ले सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें। भिक्षुक को मूंग की दाल, विशेषतया बुधवार को दान दें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - केतु
(03/07/2026 - 01/02/2027)**

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 03/04/2019 को प्रारंभ हुई ओर 03/04/2029 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 03/07/2026 को प्रारंभ होकर 01/02/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली में लग्न को दृष्टि द्वारा प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में दांपत्य संबंधों में कुछ कष्ट हो सकता है। आपकी वासना में वृद्धि के कारण जीवनसाथी रुष्ट हो सकते हैं। चरित्र में गिरावट न आने दें। अपमान और वीर्यशक्ति में हास के संकेत है। अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - शुक्र
(01/02/2027 - 02/10/2028)**

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 03/04/2019 को प्रारंभ होकर 03/04/2029को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 01/02/2027 को प्रारंभ होकर 02/10/2028 को समाप्त होगी।

**महादशा :- मंगल
(03/04/2029 - 02/04/2036)**

मंगल की महादशा 03/04/2029 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 02/04/2036 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। मंगल की दृष्टि छठे, सातवें तथा तीसरे भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपकी छोटी यात्राएँ हुई होंगी और आपको बौद्धिक कार्यों में सफलता तथा भाई-बहनों से सुख मिला होगा। इस दशा के दौरान व्यय, यात्रा तथा आध्यात्मिक कार्यों में वृद्धि हो सकती है।



स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु आपको मामूली चोटों और आँख की समस्याओं के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पैरों तथा टखनों में पीड़ा हो सकती है। कुछ मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

धन संचय में आपको कुछ समस्या हो सकती है किन्तु, आपकी आय आपके व्यय से कम नहीं होगी और आपके उपर ऋण नहीं होगा। छटे भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आपको विपक्षियों-विरोधियों पर विजय मिल सकती है और उनसे लाभ हो सकता है। जीविका के लिये सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी के कार्य या लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय का चयन कर सकते हैं। लोहा और इस्पात, सर्जरी, अस्पताल प्रशासन या परोपकारी संस्था से संबद्ध व्यवसाय लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों के कार्यों में परिवर्तन और साझेदारों से लाभ हो सकता है और आप करार तथा अनुबन्ध कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। सफलता वाधित हो सकती है, व्यापार में उथल-पुथल हो सकती है किन्तु दशा की प्रगति के साथ इसमें सुधार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आपको वाहन सुख मिल सकता है। यात्रा की सम्भावना है और आप व्यापार के सिलसिले में विदेश भी जा सकते हैं। यात्राएं आखिर में लाभदायक सिद्ध होंगी। ऐसा मंगल की अन्तर्दशा में होगा। जमीन-जायदाद के मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। इस दशा के दौरान सम्पत्ति का लेन-देन हो सकता है।

शिक्षा :

आपको अपनी श्रेणी बरकरार रखने के लिये कठिन परिश्रम करना होगा। किन्तु आप दृढ़संकल्प के साथ अच्छा करेंगे। आपके पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन हो सकता है। यदि आप शोध-परियोजनाओं से सम्बद्ध हैं तो इस दशा में, और खासकर बुध और मंगल की अन्तर्दशा में, अच्छा करेंगे। आपके लिये गणित, तर्कशास्त्र, विधि तथा गूढ़ विषयों का अध्ययन लाभदायक हो सकता है। आपको विरोधियों व प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिल सकती है। आपकी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुची होगी।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। बच्चों से अस्थायी रूप से दूर हो सकते हैं। उन्हें अध्ययन कार्यों के सिलसिले में घर छोड़ना पड़ सकता है। आपके जीवन साथी में बाधाओं का सामना करने की पर्याप्त क्षमता होगी। आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपकी माता के लिए समय समृद्धिदायक रहेगा, उनकी यात्रा हो सकती है और आपके उनके साथ सम्बन्ध सुन्दर रहेंगे। आपके पिता की अचल सम्पत्ति और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के व्यवसाय में उन्नति होगी और बड़ों के लिए समय लाभदायक

रहेगा। आपके उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छे रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी और इस दशा के दौरान आप उनसे सम्पर्क बनाये रहेंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और व्यय हो सकता है। राहु कुछ समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लाभ किन्तु स्वास्थ्य कुछ खराब रहेगा। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यवसाय में प्रगति होगी जबकि बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी शिक्षा उत्तम होगी और निवेश तथा सद्दा सफल रहेगा। केतु के कारण कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का आराम तथा माता से लाभ मिलेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको छोटे भाई-बहनों से सुख मिलेगा तथा यात्राएं होंगी।



**अंतर्दशा :- मंगल - मंगल
(03/04/2029 - 30/08/2029)**

आपके लिए मंगल की महादशा 03/04/2029 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 03/04/2029 को प्रारंभ होकर 30/08/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपको आर्थिक नुकसान से बचने के लिए सावधान रहना चाहिए। आपकी बहुत सी यात्राएं हो सकती हैं जिनमें कुछ व्यर्थ हो सकती हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य विभाग में काम करने करने वाले लाभान्वित होंगे। लाभदायक अनुबंध या समझौता संभव है। जीवनसाथी से कुछ मनमुटाव हो सकता है। भाइयों के साथ संबंध मधुर रहेंगे। अध्यात्म में रुचि होगी।

जीवनसाथी को मामूली व्याधि हो सकती है पर वे प्रतिस्पर्धियों और विरोधियों पर विजय प्राप्त करेंगे। आपके पिता अचल संपत्ति खरीद सकते हैं या वर्तमान जायदाद में मरम्मत आदि करवा सकते हैं। माता सौभाग्यशाली रहेंगी; उनकी कुछ यात्राएं हो सकती हैं। आपके छोटे भाई-बहन कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे।

आपकी संतान की शिक्षा या कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंध हो सकते हैं। व्यापारीगण और परामर्शदातओं को लक्ष्य प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना होगा।

नेत्र, पैर के रोग, पित्तविकार से सावधान रहें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - राहु
(30/08/2029 - 17/09/2030)**

आपके लिए मंगल की महादशा 03/04/2029 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 30/08/2029 को प्रारंभ होकर 17/09/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे और शीघ्रता से फैसले करेंगे। इससे शत्रु बढ़ सकते हैं, लेकिन आप उन पर विजयी होंगे। जीवनसाथी से धन प्राप्त हो सकता है। विदेश से व्यापारिक संबंध हो सकते हैं; व्यापार संबंधी लंबी यात्राएं हो सकती हैं। जीवनसाथी और साझेदार से मधुर संबंध बनाए रखने के लिए सावधानी की आवश्यकता है। अनुबंधों पर हस्ताक्षर हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता के धन में वृद्धि होगी; उन्हें संतान से सुख मिलेगा। आपकी माता तीर्थयात्रा कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों

को धन का लाभ होगा; उन्हें धनार्जन के बहुत से अवसर मिलेंगे। उनके प्रभावशाली मित्र होंगे ; लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा।

आपकी संतान को भौतिक सुख उपलब्ध रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो उच्चपद और धन प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो शुत्रों से सावधान रहें, वे आपको बदनाम करने की कोशिश कर सकते हैं। परामर्शदाता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। व्यापारी अनुबंधों पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

ॐ रां राहवे नमः

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(17/09/2030 - 24/08/2031)**

आपकी मंगल की महादशा 03/04/2029 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/09/2030 को प्रारंभ होकर 24/08/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपको सब सुख उपलब्ध रहेंगे। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। धन और सम्मान में वृद्धि होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। कार्यक्षेत्र में अचानक सकारात्मक परिवर्तन हो सकता है। संतान का जन्म संभव है। विवाह हो सकता है। चुनाव में या कार्यों में सफलता मिल सकती है। मुकदमे में विजय होगी। घरेलू सुख रहेगा। लंबी यात्रा या तीर्थयात्रा संभव है। नये अवसर उपलब्ध होंगे।

आपके जीवनसाथी को उच्चपद और धन का लाभ हो सकता है। पिता को सट्टेबाजी से लाभ संभव है। माता को सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी, तीर्थयात्रा करेंगी। आपके भाई-बहन धन कमाएंगे; कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे; उनकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, ज्ञानार्जन करेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो समृद्ध बनेंगे, लंबी यात्राएं होंगी, प्रसिद्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो अचानक लाभ और सकारात्मक परिवर्तन का योग है। परामर्शदाता अचल संपत्ति क्रय करेंगे; धनी बनेंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम होंगे। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले अनाज, स्वर्ण और हल्दी का दान करें।